महर्षि वाल्मीकि की रामायण में वर्णित शिक्षा

डॉ. बलजीत सिंह यादव

प्रवक्ता संस्कृत विभाग

स्नातकोत्तर महाविद्यालय महेन्दगढ़

हरियाणा

रामायण कालीन शिक्षा प्रणाली की यह विशेषता थी कि वेद से लेकर रामायण पर्यन्त सम्पूर्ण संस्कृत- वाङ्मय विद्वानों को कंठस्थ रहते थे, इसलिये वेद का दूसरा नाम अनुश्रव है, क्योंकि गुरु के उच्चारण के बाद जिसका उच्चारण किया जाय उसे अनुभव (वेद) कहते हैं, श्रीमद् वाल्मीकि रामायण साक्षात् वेद अवतार है, पुरुषोत्तम भगवान जब दशरथनंदन श्रीराम के रूप में अवतीर्ण हुए, तब वेद भी महर्षि वाल्मीकि के द्वारा रामायण के रूप में अवतरित हुए.

रामायण में वर्णित शिक्षा केन्द्रः रामायण काल के विश्वामित्र एवं वशिष्ठ के आश्रम श्रेष्ठ विद्या-केन्द्रों के रूप में प्रतिष्ठित थे, वाल्मीकि जी के आश्रम में सर्व समर्थ चतुर्मुख ब्रह्मा जी स्वयं उनके आश्रम में पधारे थे.

आजगाम ततो ब्रह्मा लोककर्ता स्वयं प्रभुः,
चतुर्मुखो महातेजा द्रष्टुंत मुनिपुंगवम्

अर्थात् अखिल विश्व की सृष्टि करने वाले, सर्व समर्थ महातेजस्वी चतुर्मुख ब्रह्मा जी मुनिवर वाल्मीकि से मिलने के लिये स्वयं उनके आश्रम पर आये. इसी प्रकार चित्रकूट में अत्रिमुनि का आश्रम श्रेष्ठ विद्या केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित था:

एते चाप्यभिषेकार्दा मुनयः कलशोद्यताः,
सहिता उपवर्तन्ते सलिलाप्लुतवल्कला:
अग्निहोत्रे च ऋषिणा हुते च विधिपूर्वकम्,
कपोताङ्गारूणो धूमो दृश्यते पवनोद्धतः,

महर्षि (अत्रि) ने विधिपूर्वक अग्निहोत्र-सम्बन्धी होम कर्म सम्पन्न कर लिया है,अत: वायु के वेग से ऊपर उठा हुआ यह कबूतर के कण्ठ की भाँति श्यामवर्ण का धूम दिखाई दे रहा है, अत्रि मुनि का आश्रम चित्रकूट में स्थित था
जहाँ का वातावरण अत्यन्त पवित्र तथा रमणीय था, तथा अनेकों शिष्य विद्याध्ययन करते थे, सीता जी को पतिव्रता धर्म की शिक्षा सती अनसूया द्वारा इसी आश्रम में प्रदान की गई थी जो शिक्षा, सम्पूर्ण नारी जगत् के लिये एक आदर्श रूप बनी हुई है.
इस प्रकार रामायण काल में अनेकानेक विद्या केन्द्र थे,जिन आश्रमों में सभी प्रकार की विद्यायें शिष्यों को प्रदान की जाती थीं, यही आश्रम गुरुकुल कहे जाते थे, जहाँ पर प्राकृतिक वातावरण में गुरु के सानिध्य में रहकर ब्रह्मचारी विद्याध्ययन करते थे तथा अपने लक्ष्य को प्राप्त करते थे.रामायण काल मुख्यतः: आश्रम प्रधान युग था. इन आश्रमों में निवास करने वाले ऋषिगण ज्ञान के अक्षय भण्डार एवं श्रेष्ठ आचार्य या गुरु होते थे. आश्रमों में ये मुनिगण अपनी सहधर्मिणी और संतान सहित निवास करते थे.गुरु वशिष्ठ का गुरुकुल, महर्षि भारद्वाज का गुरुकुल,महर्षि वाल्मीकि का गुरुकुल, चित्रकूट में अत्रि जी का गुरुकुल, महर्षि अगस्त्य का गुरुकुल रामायण काल के प्रमुख शिक्षा केन्द्र थे.

संस्कृत साहित्य में महर्षि वाल्मीकि कथा 'रामायण आदि काव्य समझा जाता है तथा वाल्मीकि 'आदि कवि'माने जाते हैं. कथा प्रसिद्ध है कि जब व्याध के बाण से विंधे हुए कांच के लिए विलाप करने वाली ने क्राँची का करुण शब्द ऋषि सुना, तो उनके मुंह से अकस्मात् यह श्लोक निकल पड़ा:

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती: समाः,
यत् क्रौंच मिथुनादेकमवधीः काममोहितम् .

अर्थात्- हे निषाद ! तुमने काम से मोहित इस क्रौंच पक्षी को मारा है, अत: तुम सदा के लिए प्रतिष्ठा प्राप्त न करो.
महर्षि की कल्याणमयी वाणी सुनकर स्वयं ब्रह्मा उपस्थित है और उन्होंने रामचरित लिखने के लिये उनसे कहा.
रामायण की रचना इसी प्रेरणा का फल है. भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही मानव जीवन में शिक्षा का विशेष महत्व रहा है, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास आश्रम को सुखमय बनाने के लिए ब्रह्मचर्याश्रम (बाल्यावस्था) में ही शिक्षा के लिये गुरुकुल में जाकर अध्ययन द्वारा वेद वेदान्त आदि शास्त्रों में योग्यता प्राप्त की जाती थी. भारत भूमि में अवतार लेने वाले ईश्वर को भी गुरु द्वारा शिक्षा प्राप्त करने की विचित्र परंपरा का

निर्वाह यहाँ दृष्टिगोचर होता है. मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम गुरुकुल में जाकर महर्षि वशिष्ठ से सम्पूर्ण विद्याओं की शिक्षा स्वल्पकाल में ही ग्रहण कर लेते हैं

गुरु गृह गये पढ़न रघुराई, अल्पकाल विद्या सब आई. जाकी सहज स्वास श्रुतिचारी, सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी. विद्याध्ययन तो राजमहलों में रहकर भी किया जा सकता था किन्तु 'गुरु-गृह' के माध्यम से विद्या के वास्तविक उद्देश्य की ओर संकेत किया गया है. रामायण काल में तो अयोध्या नगरी में कोई भी मनुष्य अविद्वान,

मूर्ख एवं नास्तिक दृष्टिगोचर नहीं होता था. अयोध्या में न तो कोई मूर्ख और न ही नास्तिक मनुष्य देखने को मिलता था, 'नाषडङ्गःविदत्रास्ति नाव्रतो ना सहस्रदः " अर्थात् अयोध्यापुरी में वेद के छ: अंगों को न जानने वाला कोई नहीं था अर्थात-सभी विद्वान थे और अपने कर्तव्यों को जानने वाले थे.

रामायणकालीन विविध विद्यायें : गुरुकुल शिक्षा पद्धति में शारीरिक शिक्षा प्रदान की जाती थी, इसका वर्णन अयोध्यापुरी के वासियों के शारीरिक.कौशल से प्राप्त होता है:

ये च वार्णेन विध्यन्ति विविक्तमपरापरम्,
शब्दवेध्यं च वित्तं लघुहस्तता विशारदा:,
सिंह व्याघ्रवराहाणां मत्तानां नदतां वने.
हन्तारौ निशितैः शस्त्रैर्वलाद् बाहुबलैरपि.
तादृशानां सहस्रैस्तामभिपूर्णों महारथैः,
पुरीमावासयामास राजा दशरथस्तदा.'

अर्थात् जिनके सधे सधे हाथ शीघ्रता पूर्वक लक्ष्यवेध करने में समर्थ हैं,अस्त्र शस्त्रों के प्रयोग में कुशलता प्राप्त कर चुके हैं तथा जो वन में गरजते हुये मतवाले सिंहों,व्याघ्रों,सुअरों को तीखे शस्त्रों से एवं भुजाओं के बल से भी बल पूर्वक मार डालने में समर्थ हैं,ऐसे सहस्रों महारथी वीरों से राजा दशरथ की अयोध्यापुरी भरी-पूरी थी, शिक्षा के क्षेत्र में ज्योतिष एवं नक्षत्र ज्ञान ऋषियों को पूर्ण रूप से था.

रामायण काल में ज्योतिष विद्या चरम सीमा पर थी. राजा दशरथ के पुत्र न होने का शोक जब घर कर गया था तो ज्योतिषाचार्यों ने विचार कर बताया कि राजन आप विभाण्डक ऋषि श्रृंगी को बुलाकर पुत्रेष्टि हेतु यज्ञ करायेंगे तो आपको संतान लाभ होगा.सन्तान के जन्म विवाह आदि में आज भी ज्योतिष को प्रमुखता दी जाती है तथा यात्रा मुहूर्त शुभकार्य की सिद्धि विशेष पर्वो की महत्ता का आकलन ज्योतिष शास्त्र द्वारा किया जाता रहा है. दासी मन्थरा ने नगर के ज्योतिषियों से विचार करवा रखा था कि भारत ही युवराज होंगे ऐसी बातें कैकेयी को बतलाकर कोप भवन में जाने की दृढ़ता प्रदान कर दी थी. वे त्रिकालदर्शी ऋषि भूत, वर्तमान व भविष्य की सब बातों को जानने में सक्षम थे. महर्षि याज्ञवल्क्य ने राम के वनवास होने के पहले ही यह बतला दिया था कि राम राजगद्दी संभालने से पहले वनवास जायेंगे और कुमार भरत 14 वर्ष राज्य का कार्यभार संभालेंगे.

रामायण में शिक्षा ग्रहण करने की अवधि:

वाल्मीकि रामायण में शिक्षा प्राप्त करने की अवधि इस प्रकार बताई गई है. ब्रह्मचारी का प्रवेश 8 वर्ष, 12 वर्ष और
कहीं 16 वर्ष की अवस्था निश्चित थी, सामान्य अपवाद को छोड़कर शिष्यों की शिक्षा दीक्षा 8 वर्ष से 16 वर्ष के बीच सम्पन्न हो जाती थी, जब विश्वामित्र जी राक्षसों के विनाश हेतु राम को माँगने आये तो

ऊन षोडश वर्षो मे रामो राजीव लोचन:,
न युद्धयोग्यतामस्य पश्यामि सह राक्षसः.'

दशरथ ने कहा कि अभी तो मेरे राम 16 वर्ष से भी कम उम्र के हैं इनमें तो अभी राक्षसों से युद्ध करने की योग्यता भी नहीं है.

बालो यकृत विद्यश्च न च वेत्ति बलाबलम्
न यास्त्र बलसंयुक्तो न च युद्ध विशारदः '

मेरा राम अभी बालक है.इसने अभी तक युद्ध की विद्या ही नहीं सीखी है, यह दूसरे के बलाबल को नहीं जानता है,न
तो यह अस्त्र बल से सम्पन है और न युद्ध की कला में निपुण है. पुन: वनवास की अवधि में महर्षि अगस्त से शास्त्रों की प्राप्ति करना यह सुनिश्चित करता है कि शिक्षा की स्वाभाविक अवस्था जीवन के प्रारंभिक 25 वर्षों तक
नियत थी. इस अवस्था में सीखने एवं साधने के लिए कोमल शरीर व तीव्र मेघा का विशेष योगदान होता है. इस
प्रकार स्पष्ट है कि रामायण में शिक्षा प्राप्त करने की अवधि 8 से 25 वर्ष तक रही है.

रामायण में स्त्री शिक्षा :

रामायण काल में स्त्रियों को शिक्षा प्रदान की जाती थी,कौशल्या,तारा,सीता,सुनैना आदि नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा

में विदुषी थीं,ब्रह्मवादिनी कन्याएँ आजीवन अविवाहित रहकर ब्रह्मचर्य का पालन करती थीं. स्वयंप्रभा, शबरी इसी तरह कीविदुषी नारियाँ थीं, दूसरी सद्योवाहा की संज्ञा प्राप्त करती थीं जो ब्रह्मचर्य का पालन करने के अनन्तर गृहस्थ आश्रम में प्रविष्ट होती थीं ऐसी ऋषि पत्नी अनसूया,अरुन्धती आदि महान नारियाँ थीं, इन सभी का पतिगृह अथवा पितृ गृह में संरक्षित आश्रमों में जीवन निर्वाह का वर्णन मिलता है. शिष्य के कर्तव्यः गुरुकुल में रहकर आश्रम का प्रत्येक कार्य करते हुये विद्याभ्यास में संलग्न रहना, अनुशासन में रहना प्रत्येक शिष्य का कर्तव्य था.शिष्य चाहे सम्राट का पुत्र ही क्यों न हो उसे गुरुकुल में रहकर प्रत्येक छोटे से छोटा कार्य करने में कोई संकोच नहीं होता था,ऐसी भावना गुरु द्वारा शिष्य में पैदा की जाती थी. इसका सबसे बड़ा प्रमाण है कि राजा दशरथ के चारों पुत्रों ने शिष्य वृत्ति का पालन किया तथा तथा अल्पकाल में ही विद्याओं को ग्रहण कर लिया

था.शिक्षा के प्रभाव से ही राम पुरुषों में उत्तम अर्थात् पुरुषोत्तम बने तथा सम्पूर्ण विश्व में पूजे गये. शिष्य का प्रथम कर्तव्य होता था कि वह विद्या को पूर्ण रूप से ग्रहण करे.

संदर्भ सूची

1) कल्याण,शिक्षक-पृ. 90 गीता प्रेस गोरखपुर.
2) वा. रा. बालकाण्ड द्वितीय सर्गः श्लोक 23,प. 34, गीता प्रेस ।गोरखपुर, वाल्मीकि,गोरखपुर
3) या.रा.अयो. का. एकोनविंशत्यधिकशततमः सर्गः, श्लोक 5,6,प्रेस गोरखपुरपृ. 471 गो.प्रे. गोरखपुर
4) रामायण पालकावाटताया सगा 2. लाख 1
5) रा.च.मा. बालकाण्ड दोहा- 204, पृ. 4-5 गीता प्रेस गोरखपुर
6) वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड श्लोक 15.4.44 पृष्ठ सर्ग, गी.प्रे. ।
7) या.रा. बालकाण्ड पंचमः सर्गः श्लोक 20, 21, 22 पृ. 42गीता
8) यारा बालकाण्ड विंशःसर्गः श्लोक 2.पृ.74 गीता प्रेसगोरखपुर
9) तत्रैय श्लोक 7, पृ. 74 गीताप्रेस गोरखपुर.